International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 14-01-2019; Accepted: 17-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 50-52

रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण अधिगम सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन

पीयूष राज प्रभात[1], डॉ0 जय सिंह[2]
[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण अधिगम सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में 80.00 प्रतिशत प्राचार्य, 93.33 प्रतिशत शिक्षक, 87.33 प्रतिशत छात्रों व 84.72 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 55.33 तथा 52.46 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.11 तथा 12.45 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.51 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

मूल शब्द : रीवा जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षण अधिगम सामग्री।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मानव जीवन की आधार शिला है। व्यक्ति को जन्म से ही शिक्षा की आवश्यकता होती है। बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए एक व्यवस्थित शिक्षा की परम् आवश्यकता होती है।

एक अच्छी शिक्षा माता–पिता के समान पालन–पोषण करती है, पिता की तरह बच्चे के जीवन में उचित मार्गदर्शन करके अपने कार्यो में लगाती है तथा एक पत्नि की भाँति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है और जीवन पर्यन्त साथ निभाती है।

इसमें प्रत्यक्ष अनुभवों से लेकर अर्मूत चिन्तन तक जितने भी प्रकार के अनुभव विभिन्न शिक्षण सहायक साधनों द्वारा हो सकते हैं, उन अनुभवों को प्रदान करने के लिये इन साधनों को विभिन्न श्रेणियाँ प्रदान की गई हैं।

ये शिक्षण अधिगम सामग्रियाँ जटिल विषय वस्तु को स्पष्ट करने श्रव्य, दृश्य इन्द्रियों का प्रभाव पूर्ण उपयोग करने, यथार्थ अनुभव प्रदान करने, रुचि एवं छपान की अभिवृद्धि में सहायता पहुंचाने, मानसिक विकास करने, उचित शैक्षिक वातावरण बनाने में सहायक होते है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिला वरन् सम्पूर्ण म.प्र. के माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता, वस्तुस्थिति, उपयोग की जानकारी तथा उनमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है, जिनका प्रयोग कर राज्य शासन शिक्षक प्रशिक्षणों की कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता की वस्तुस्थिति ज्ञात करना।
- शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोगी की जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर द्वारा किये जाने वाले शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ
शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु माध्यमिक शिक्षा स्तर द्वारा किये जाने वाले शिक्षण अधिगम

सामग्री के उपयोग की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर द्वारा किये जाने वाले शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण अधिगम सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – पाठक, पी.डी. (2007)[1], सिंह, ममता (2007)[2], श्रीवास्तव, डी. एस. (2006)[3], त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[4], तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017)[5] एवं गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007)[6]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेष का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01: "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्त्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग					
			किया जाता है		नही किया है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	90	72	80.00	18	20.00	-	-
2.	शिक्षक	360	336	93.33	13	3.61	11	3.06
3.	छात्र	900	786	87.33	57	6.33	57	6.33
4.	अभिभावक	360	305	84.72	34	9.44	21	5.83
योग		1710	1499	87.66	122	7.13	89	5.20

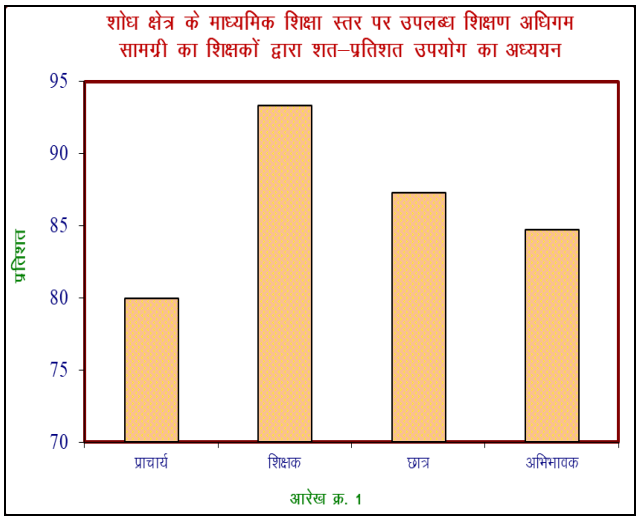

आरेख क्र. 1

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 80.00 प्रतिशत प्राचार्य, 93.33 प्रतिशत शिक्षक, 87.33 प्रतिशत छात्रों व 84.72 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है।

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 87.66 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं किशोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है। 7.13 प्रतिशत यह मानतें है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग नही किया जाता है, जबकि 5.20 प्रतिशत को शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग, के सम्बंध में कुछ भी पता नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांकः 02 "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर का अध्ययन

समूह		ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग	शहरी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग
समूह की संख्या (N)		450	450
मध्यमान (M)		55.33	12.11
मानक विचलन (SD)		12.11	12.45
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.51	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (4 0-1) + (450-1) = 449+449 = 898

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 55.33 तथा 52.46 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.11 तथा 12.45 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.51 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोग का मानक विचलन शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोग का मानक विचलन से कम है और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोग शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोग की अपेक्षा कम पायी जाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। एक तो शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री की उपयोग के प्रति लापरवाही नहीं करते।

इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

अतः परिकल्पना क्र. 2 निरसित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है

- शोध क्षेत्र में 80.00 प्रतिशत प्राचार्य, 93.33 प्रतिशत शिक्षक, 87.33 प्रतिशत छात्रों व 84.72 प्रतिशत अभिभावकों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर उपलब्ध शिक्षण अधिगम सामग्री का शिक्षकों द्वारा शत–प्रतिशत उपयोग किया जाता है।
- शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 55.33 तथा 52.46 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.11 तथा 12.45 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें ब्र का मान 3.51 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः अधिगम सामग्री के उपयोग के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ

1. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
2. सिंह, ममता, प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies. 2007य 58:85.
3. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.
4. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2016 1(5):48-50
5. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं डॉ. जय सिंह (2017) "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2(1):19-23.
6. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।